



**“मैं हमेशा के लिए जीवित रहूँगा”
(एक हिन्दु ब्राह्मण की गवाही)**

“मैं हमेशा के लिए जीवित रहूँगा” (एक हिन्दू ब्राह्मण की गवाही)

मेरा नाम विक्रम मारबली है, मैं भारतवर्ष के नगर बम्बई का हूँ। मैं औहियो के कोल्मबस नगर कि मैं अपनी मेकेनिकल इन्जिनियरिंग मास्टर्ज डिग्री प्राप्त करने आया। मैं एक हिन्दू ब्राह्मण परिवार में जन्मा था। जबकि मेरे माता पिता हिन्दू धर्म पर विश्वास करते थे, मैं 17 वर्ष की आयु से एक नशतिक बन गया था। मैं यह विश्वास करता था कि मनुष्य ने परमेश्वर तथा शैतान की अक्रिती इस कारण से बनाई ताकि वह इस गुप्त भेद को समझ सके। मैं यह अनुमान नहीं कर सकता था की लोग कैसे परमेश्वर पर विश्वास कर सकते है जिस को वह अपने ज्ञान तथा बुद्धि से देख और समझ नहीं सकते थे।

जब मैं कोल्मबस में था, मुझे कई परिवार के द्वारा धन्यवाद के दिन रात्रि भोजन पर निमन्त्रित किया गया। मेरे वह जाने पर, उन्होंने मुझे यीशु मसीह के विषय में बताया, जो इस पृथ्वी पर हमारे पापों के लिए मरने आया ताकि हम अनन्त जीवन की प्राप्ति कर सके। सब मनुष्य पापी है और पश्चाताप की अवश्यकता है। केवल यीशु मसीह, परमेश्वर का पुत्र हम को हमारे पापों से बचा सकता है यदि हम उसे अपना व्यक्तिगत उद्धार करता तथा प्रभु मान ले। यूहन्ना 3:16 यह कहता है,

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि

उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।”

पहले मेने उनकी बातों पर विश्वास नहीं किया। किन्तु मेने स्वर्ग, नरक और अनन्त जीवन और बाईबल के अधिकार के विषय में बहुत से प्रश्न पूछे। मुझे परिवार बहुत पसन्द आया तथा मैं उन के साथ हर रविवार को कलीसिया जाने लगा। क्योंकि मैं खुले दिमाग का और सुनने और पढ़ने में इच्छुक था, उन्होंने मुझे एक बाईबल तथा प्रचारक सहित्य सामग्री पढ़ने के लिए दी। क्रिस्मस की छुट्टियों के बीच मैंने अपने जीवन पर प्रकाश डाला, और यह ज्ञात किया कि मैं एक वस्तु इकट्ठी करने वाला तथा आनन्द खोजी व्यक्ति था। मित्र हो मेरे लिए सब कुछ थे, और उनके बिना मुझे अकेलापन लगता था। यह अकेलापन का अनुभव बहुत बुरा था और मैं बाईबल तथा परमेश्वर के विषय में छोटी पुस्तकें पढ़ा करता था।

मुझे एक बहुत अच्छे कारण की अवश्यकता होती थी ताकि मैं किसी भी वस्तु पर विश्वास कर सकुं। मैं यह जानता था कि बाईबल में बहुत सी भविष्यदवाणियां हुई थी जो छोटी से छोटी बात सौ सालों के बाद भी पूरी हो गई। मैं जानता था कि यह एसे ही हो जाने वाली बात नहीं थी। उनमें से एक यीशु मसीह, मसीहा और परमेश्वर के पुत्र जो पृथ्वी पर आने वाला था और जो हमारे पापों के लिए मरने वाला था और कब्र से पुनः स्थान के विषय में हुई थी उसी समय में, मैं जानता था कि बाईबल सृष्टि की क्रमविकास

सिद्धान्त के विरोध में थी, जो इस सत्यता पर बनी थी कि पृथ्वी की आयु बहुत थी, जिसे मैं हमेशा एक सच्चाई मानता था।

मैंने उत्पत्ति एवं क्रम: विकासवाद पर कुछ सहित्य पढ़े और मैंने महसूस किया कि कार्वन का निरधारण मात्र उस अनुमान पर आधारित है कि लाखों वर्षों से इस पृथ्वी में वातावरण में रेडियो धर्मों कार्वन एवं सामान्य कार्वन के बीच कार्वन का अनुपात स्थिर है। यह एवं विकास सिद्धान्त अवलोकन मात्र से परमाणित नहीं किया जा सका नहीं इस के गुणों के विषय में पहले से ही जानकारी दिया जा सका कोई भी वैज्ञानिक सिद्धान्त न सिर्फ किसी चीज का लक्षण बता सके बल्कि उसके गुणों की जानकारी पहले से ही देने योग्य होनी चाहिए। इसके साथ ही विकासवाद एवं अज्ञात कड़ी “मिसिंग लिंक” के बीच एक बड़ी खाई है जिसके विषय में अब तक खोज नहीं की जा सकी है, जिसको भूगर्भ शास्त्रियों के सतत प्रयत्न के बावजूत अब तक किसी ने इस की खोज नहीं कर पाई है।

बाईबल उत्पत्ति में यह बताती है,

“आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की परमेश्वर ने जाति-जाति के बड़े-बड़े जल-जन्तुओं की, और उन सब जीवित प्राणियों को भी सृष्टि की जो - चलते-फिरते हैं। ... तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया।” तब से मैंने वादविवाद किया की विकास का सिद्धान्त बाईबल के आधार पर समझना कठिन

अविज्ञानिक है। ऐसा मैंने अनुभव किया की बाईबल को सचमुच विश्वास करने के द्वारा मुझको किसी भी चीज को जो गलत सावित हो चुकी है स्वीकार न करूं। मैंने यह भी अनुभव किया की परमेश्वर के असत्त्व को कोई जन ना ही सावित और असावित नहीं कर सकता है, और कि परमेश्वर में विश्वास अखिरकर अन्ध विश्वास की बात हो जाती है। इत्रामियो 11:6

“और विश्वास विना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिये, कि वह है,”

बाईबल को स्वीकार करने के द्वारा जो मैं दिमागी गलतियां कर रहा था दूर हो गई, और मैं परमेश्वर के विषय में एक सकारात्मक तौर से विचार करने लगा। मैं जानता हूं कि हिन्दु बहुत से ईश्वरों और जातियों में विश्वास करते हैं। इन ईश्वरों के पास मनुष्य के लिए कोई सन्देश या भविष्यद्वाणि नहीं है अपने अधिकार के लिए। प्रेरितों के कम 4:12 “और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नही, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नही दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

मैंने देखा कि मसीहत अद्वतीय थी और यीशु मसीह पृथ्वी पर एक उदेश्य के लिए आया था कि मानव जात को उनके पापों से बचाए। यद्यपि मैं बाईबल को नहीं समझ सका फिर भी मैंने जाना कि ये सच्चाई है। मैंने यह भी जाना की यदि मैं प्रभु को स्वीकार करू तो मैं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं

के सिद्ध दावा कर, जिनमें कीसबसे बड़ा क्रि.सू.के बाद अनन्त जीवन था। यूहन्ना 11:25,26

“यीशु ने उस से कहा, पुनः स्थान और जीवन मैं ही हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाये तो भी जीयेगा। और जो जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।”

मैंने देखा की कई परिवार मसीह के लिये जीवित है और मैंने उनके परिवार में आनन्द का अनुभव किया। सचमुच उनको परमेश्वर के द्वारा अशीष मिली है। यह सारे विचार मेरे दिमाग में भर गये और मैं उनके विषय में एक हफ्ते तक विचार किया। तब मैंने “एक परमेश्वर का बालक बनना” नामक एक पर्चा मिसिस कई से पाया जिन्होंने मुझ से एक ही समय के अन्दर पढ़ने को कहा मैंने उसे पड़ा और अनुभव किया कि मैं अतिमक वस्तुओं के लिए जीवित नहीं था, और परमेश्वर का एक बालक बनने के लिए मुझे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करना है। लूका 4:4

“कि मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहेगा, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है” उस रात मैं सोने के लिए चला गया एक स्वीकार दिमाग के साथ और यह जानते हुए की मैं एक जल्द फैसला करने जा रहा हूँ।

अगली सुबह अपने आप को नम्र बनाने के लिए, अपने पापों को इकरार करने के लिए और उस पर विश्वास करने के लिए मैंने एक शक्ति का अनुभव किया।

मैंने फैसला ले लिया। मैंने कहा, “मेरे प्रभु यीशु, मैं विश्वास करता हूँ कि मेरे पापों के लिए मरा। तेरा विजयी पुनः स्थान मुझे बचाने के लिए हुआ और मैं चाहता हूँ कि तू मुझे बचा। मैं विश्वास करता हूँ कि तू मेरा मुक्ति दाता है। मैं तुझे अपने हृदय और अपने जीवन में स्वीकार करता हूँ। इसके बाद मेरी आंखों में आनन्द के आंसू थे जैसे मैंने अनुभव किया वो मुझे अपनी इच्छा के अनुसार मेरे जीवन की अगुवाई करेगा, और फिर मैंने अपने आप को अकेलापन नहीं महसूस किया। वह मेरे साथ हमेशा रहेगा। निति वचन 3:5b

“तू अपनी समझ का सहारा न लेना, बरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी का स्मरण करके सब काम करना।”

यह है मेरे उद्धार की कहानी है। मैं व्यक्तिगत आपको चुनौती देता हूँ बाईबल में परमेश्वर की खोज करो, इसलिए आप भी इस महान बहुमूल्य अनन्त जीवन के दान का दावा प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा कर सकें। यीशु ने कहा, “जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह बच जायेगा।”

मसीह के लिए मेरा निर्णय

मैं यीशु मसीह पर विश्वास करता हूँ और उसे अपना प्रभु और उद्धार करता उसे स्वीकार करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु ने मेरे लिए कलवरी क्रूस पर दुःख उठाया और कलवरी क्रूस पर मारा गया, और वह मुर्दा में से जीवित

है। मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मेरे पापों से मुझे क्षमा करता और अपने लोहू से शुद्ध करता है। मैं विश्वास करता हूँ की परमेश्वर मुझ को अब अपना बेटे यीशु के द्वारा मुझे अपना बालक बनाता है।

मैं विश्वास करता हूँ की परमेश्वर मेरे हृदय में अपनी पावित्र आत्मा देता है और मुझे अनन्त जीवन देता है।

नाम.....

पता

शहर/राज्य/पिन कोड.....

यदि आप ने इसका निर्णय किया है, हमें लिखिये और हम आपको मुफ्त सहित्य भेजेंगे जो आप की नये मसीह जीवन में सहायता करेगा। प्रभु यीशु मसीह आप को अशीष दे जब आप ऐसा करते हैं।

The Light of Hope

Cheppad P.O., Alappuzha Dist - 690 507

Kerala State, India